उपसंहार

उपसंहार

शंकर शेष का व्यक्तित्व और कृतित्व --

डॉ.शेष जी का जन्म २ अक्तूबर १९३३ में विलासपूर के सामन्तशाही महाराष्ट्रीय परिवार में हुआ । उनकी आरम्भिक शिक्षा विलासपुर में हुई । उच्च-शिक्षा के लिए वे नागपुर के मॉरिस कॉलेज में दाखिल हुए । कॉलेज जीवन में ही उन्होंने नाटक लिखना प्रारम्भ किया था । डॉ.शेष के व्यक्तित्व के कुछ पहलू इसी तरह मिलते हैं -- उनका व्यक्तित्व महान था । एक मिलनसार व्यक्ति होते हुए उनमें आत्मसुधार की वृत्ति थी । वे चरित्र संपन्न व्यक्ति थे । उनका स्वभाव विनम्र था, पुस्तकों के साथ उनका लगाव होने के कारण चिंतनशीलता का गुण भी उनमें था । अध्यापक की भूमिका अदा करने के कारण वे अच्छे वक्ता भी थे । वे आशावादी जीव थे । अत: इन सभी गुणोंका उनके कृतित्वपर असर हुआ है । उन्होंने अनेक नाटकों का सृजन किया । कुछ नाटक छोड दिये जाए तो उनके अधिकतर नाटकों का मंचन हो चुका है । बंबई का काल उनकी नाट्य यात्रा का आखरी पडाव है । डॉ.शंकर शेष ने सामाजिक ,पौराणिक,ऐतिहासिक तथा समकालिन आदि विभिन्न विषयों को अपनाया है । प्राचीन कथा को लेकर नये संदर्भ देने की उनकी असाधारण क्षमता ही उन्हें श्रेष्ठता एवं सफलता प्रदान करती है । विद्यार्थी जीवन में ही उन्होंने `बिन बाती के दीप`,`बंधन अपने अपने`, `खुजराहों का शिल्पी`,`फन्दी`,`एक और द्रोणाचार्य और` कालजयी` जैसे श्रेष्ठ नाटकोंकी रचना की । आरम्भ से ही उनमें शैली वैचित्र्य के साथ-साथ विषय की विविधता दृष्टिगोचर होती है । उन्होंने सामाजिक,धार्मिक,तथा आधुनिक समस्याओं को लेखन का आधार बनाया है । वे आधुनिक काल के व्यापक क्षितिज प्रदान करनेवाले सशक्त नाटककार हैं । उनके अनुभव संपन्न व्यक्तित्व का रचनाओं पर गहरा प्रभाव है ।

हिन्दी नाटकोंका विकासात्मक अध्ययन --

हिन्दी नाटक साहित्य अनेक धाराओं से बहता हुआ आज के नाटय-रूपी अथांग समुन्दर में पहुँचा है। भारतेन्दु काल में इसका प्रारंभ हुआ। पाश्चात्य प्रभाव के साथ पूर्वी तत्वों का मेल खाते हुए,क्षीण रंगमंच के सहारे यह अपनी विकास की पगडंडी पर चलता रहा। फारसी रंगमंच ने इसके विकास के प्रारम्भिक चरणों में इसका साथ दिया। प्रथम प्रहसन,फिर पौराणिक,धार्मिक,अनूदित, सामाजिक इस क्रम से यह धारा बहती हुई आज आधुनिक नाटकों पर आकर स्थिर हो रही है। इसके विकासपर पाश्चात्य प्रभाव की छाप अधिक गहरी है,जो कि बीसवीं शती की हर साहित्य विधापर है। विषय और शैली दोनों में परिवर्तन करती हुई यह धारा रंगमंच में अधिक प्रगति नहीं कर सकी, जितनी कि अन्य भाषाओं ने की है। फिर भी हिन्दी नाटक साहित्यिक दृष्टि से मौलिक और मूल्यवान रहे हैं। उनका जनजीवन से गहरा संबंध रहा है। अत: इस विधा का भविष्य अत्यन्त उज्ज्वल नजर आता है।

डॉ.शंकर शेष के नाटकों का सामान्य परिचय -

डॉ.शंकर शेष ने अनेक नाटकों का सृजन किया। कुछ नाटक छोड दिये जाए तो सभी नाटकोंका मंचन हो चुका है।बंबई का काल उनकी नाटय यात्रा का आखरी पडाव है। डॉ.शंकर शेष ने सामाजिक,पौराणिक,ऐतिहासिक, समकालिन विभिन्न विषयोंको चित्रित किया है। प्राचीन कथा को लेकर नये संदर्भ देने की उनकी असाधारण क्षमता ही उन्हें श्रेष्ठता तथा सफलता प्रदान करती है।

उन्होंने अनेक नाटकों का सृजन किया है। जैसे -`मूर्तिकार (सन १९५५), `रत्नगर्भा (सन १९५६),`` नई सभ्यता के नये नमूने ( सन १९५६ ),` बेटोंवाला बाप`( सन १९५८ ),` तिल का ताड ( सन १९५८ ),`` बिन बाती के दीप` ( सन १९६८ ),` बाढ का पानी` ( सन १९६८ ),` बंधन अपने अपने (सन १९६९),

` खुजराहों का शिल्पी `, (सन १९६०),` एक और द्रोणाचार्य (सन १९७१), ` फन्दी ` (सन १९७१ ),` कालजयी (सन १९७३),` घरौन्दा ` (सन १९७५), ` अरे । मायावी सरोवर ` (सन १९७४),` रक्तबिज ` (सन १९७६),` पोस्टर ` (सन १९७७),` राक्षस ( सन १९७१ ),` कोमल गांधार (सन १९७९), ` आधी रात के बाद ` (सन १९८१),` चेहरे ` (सन १९७८) ।

आदि नाटक उन्होंने कई समस्याओं को लेकर लिखे हैं ।

घरौन्दा नाटक का कथ्य --

डॉ.शंकर शेष जी ने ` घरौन्दा ` नाटक में कई समस्याओं को चित्रित किया है । ये समस्याएँ समाज को खोखला बनाती हैं ।` घरौन्दा ` नाटक में प्रमुख रूप से घर की समस्या का चित्रण किया है । बंबई जैसे महानगर में रहने वाले लोगों के सामने घर का संकट होता है । महानगर में घर की स्थिति इस तरह है कि वहाँ जीवन साथी मिल सकता है लेकिन रहने के लिए घर नहीं मिलता । इस नाटक के द्वारा डॉ.शंकर शेष जी ने प्रेम,संघर्ष और करुणा का चित्र लोगों के सामने प्रकट किया है । आज मध्यवर्ग इसी खींचातानी में अटक पड़ा है कि एक ओर आर्थिक समस्या तो दूसरी ओर नैतिकता का बोझ ।` घरौन्दा ` की नायिका छाया अपने घरौन्दे के स्वप्नपूर्ति के लिए प्रयत्नशील है पर बार-बार आनेवाली आर्थिक मुसीबतों से रेत के घरौन्दे की तरह वह स्वप्न ढह जाता है । जब सुदीप उसे मोदी के साथ विवाह कराने की सलाह देता है तब छाया का मन नीति विरुध्द काम करने को तैयार नहीं होता । इसलिए सुदीप कहता है - " हमारी समस्या है गरीबी ...शायद गरीबी भी नहीं । हमारी समस्या है मध्यवर्गीय नैतिकता का बोझ ।" महानगरों में मध्यवर्गीयों के जीवन की समस्या बहुत ही जटिल है । डॉ.शेष ने सुदीप और छाया,इन दो पात्रों द्वारा इन समस्याओं को उजागर किया है । वे दोनों चाहकर और निर्णय लेकर भी शादी नहीं कर सकते । दोनों के मिलन में घरौन्दे की समस्या दीवार बनकर खड़ी है । उन्हें पति-पत्नी के रूप में जीना संभव नहीं होता । अर्थतन्त्र में जकड़ा

नियतिवादी दर्शन हमें `घरौन्दा` नाटक के द्वारा शंकर शेष जी ने कराया है । अर्थ ने मध्यवर्गीय व्यक्ति की रीढ को सबसे ज्यादा तोडा है । इस अर्थातन्त्र ने मध्यवर्गियों का सबकुछ छिन लिया है । अर्थतन्त्र के कारण मध्यवर्गीय समाज इस अर्थअग्नि में झुलसा गया है। अत: अर्थ के कारण इन्सान के जीवन में अभाव पैदा होता है और जब अभाव की निर्मिति होती है तब षडयन्त्र जैसे व्याधियों का विकास होने लगता है । अर्थ के कारण संस्कृति का अध:पतन हो रहा है । हर एक आदमी धन की तलाश में लगा हुआ है । मोदी अपने पैसों के बल पर ही छाया के सामने विवाह का प्रस्ताव रखता है । सुदीप भी धन हासिल करने के वास्ते ही अपनी प्रेमिका छाया को मोदी से शादी करने के लिए कहता है ।

इस नाटक में डॉ. शंकर शेष जी ने अर्थ तन्त्र में जकडे नियतिवाद के दर्शन कराने के साथ साथ अर्थ की अग्नि में झुलसे मध्यवर्गीय समाज का चित्रण किया है । अर्थ की समस्या के कारण संस्कृति का अध:पतन हो रहा है । इसमें प्रेम और संघर्ष का चित्रण भी रहा है । छाया से मोदी जैसे दिल के मरीज याने अपाहिज को भी ऊर्जस्विता प्रदान की है तो सुदीप जैसा युवक अच्छा होते हुए भी वह नपुंसक निर्णय के कारण अपाहिज बना है । मध्यवर्गीय नैतिकता की समस्या का चित्रण करते हुए लेखक इसमें भारतीय स्त्री के संस्कारों का महत्व बताता है । संक्षेप में `घरौन्दा` नाटक का कथ्य यही है ।

घरौन्दा नाटक का शिल्प --

डॉ. शंकर शेष के `घरौन्दा` नाटक की कथावस्तु संक्षिप्त होते हुए रोचक है । दर्शकोंकी उत्सुकता नाटक में अन्ततक बनी रहती है । आगे की सम्भावनाओं के प्रति दर्शक अन्त तक उत्सुक रहता है कि देखे नाटक में आगे क्या होता है ? कथा के आरम्भ में छाया और सुदीप अपने `घरौन्दे` के सुन्दर स्वप्न को संजोते हैं । कथा के मध्य में वे दोनों इस स्वप्न की पूर्ति के हेतु संघर्ष करते हैं । कथा का अन्त शोकमय बन गया है । यह नाटक नायिका प्रधान है, जिसमें

प्रमुख नारी पात्र है छाया और अन्य सात पात्र । कुलमिलाकर इस नाटक में आठ पात्र है । संवाद संक्षिप्त फिर भी कथा और चरित्र चित्रण में सहायक है । भावोत्कटता के साथ साथ पात्रों की शैक्षिक,सामाजिक तथा मानसिक विशेषताओं को व्यक्त करनेवाले ये कथोपकथन गहरे अर्थव्यंजक भी है । इस नाटक की भाषा पूर्णतया नाटकीय है । व्यंग्य से भरी है । नाटककारने कई कई अंग्रेजी शब्दों के साथ साथ ऊर्दू,फारसी शब्दों का प्रयोग किया है । कहीं-कहीं मुहावरें भी दिखाई देते हैं । महानगरी मकान समस्या की भयावहता और उससे उत्पन्न मानव जीवन में व्याप्त नाटकीयता के साथ अनादी काल से मानव मन में जागी 'घरौन्दे' की असली धारणा चित्रित करना इसका उद्देश्य रहा है यह नाटक अभिनयता तथा मंचियता की दृष्टि से भी सक्षम है । इस नाटक का शीर्षक भी अर्थपूर्ण है । कुलमिलाकर डॉ.शेष की 'घरौन्दा' यह नाटयकृति कथ्य और शिल्प की दृष्टि से एक अनन्य साधारण महत्त्व से अनुपम और बेजोड कृति समझी जा सकती है ।